दिनांक–11.02.2025

B.A.Part-III Hons (Philosophy)

लघु उत्तरीय

जैन का त्रिरत्न

जैन दर्शन के त्रिरत्न सम्बन्धी सिद्धान्त का भारतीय दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान है। जैनी तीर्थंकरों के विचार में 'केवल ज्ञान' की प्राप्ति का यही एक मार्ग है, जिसमें जीव कर्म मुद्गलों के प्रभाव से पूर्णरूपेण मुक्त होकर अपने साधन चतुष्ट्य स्वरूप की अनुभूति के साथ सिद्ध-शिक्षा का विश्राम करता है। जीव का वास्तविक स्वरूप यहाँ साधन चतुष्ट्य से सम्पन्न है। यह चतुष्ट्य अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य और अनन्त आनन्द के रूप में जाना जाता है। यही जीव का स्वाभाविक स्वरूप है। कवायों (क्रोध, लोभ, मान, माया) के प्रभाव में जीव कर्म करता है और धीरे-धीरे कर्म मुद्गल जीव को जकड़ लेता हैं। ऐसी स्थिति में उसका स्वाभाविक स्वरूप अर्थात् अनन्त या साधन चतुष्ट्य मलीन या अविच्छिन्न हो जाता है और वह बन्धनग्रस्त हो दु:खों को भोगता है।

'त्रिरत्न', जो सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चरित्र है, की रगड़ से, ये कर्म मुद्गल समाप्त हो जाते हैं और जीव के साधन चतुष्टय गुण पुन: प्रकाशमान हो जाते हैं। • सम्यक् ज्ञान, आगमों का ज्ञान है, वहीं • सम्यक् दर्शन, तीर्थंकरों में आस्था तथा मुख्य अनुशासन है। • सम्यक् चरित्र–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य का अनुपालन है। अहिंसा–मन, कर्म, वचन से हिंसा न करना है; वहीं सत्य मन, कर्म एवं वचन से सत्यमार्ग का अनुसरण करना है; अस्तेय–चोरी नहीं करना है; वहीं अपरिग्रह–आवश्यकता से अधिक धन का त्याग है; तथा ब्रह्मचर्य–मन, कर्म एवं वचन से कामेन्द्रियों पर नियंत्रण है।

सांख्य का त्रिगुण सिद्धांत

सांख्य ने प्रकृति को त्रिगुणात्मक कहा है। प्रकृति को तीनों गुणों की साम्यवास्था बताया है। ये तीन गुण हैं– सत्व, रजत् और तमस्। अब विभिन्न गुणों की व्याख्या एक-एक करके होगी।

सत्व : सत्व गुण ज्ञान का प्रतीक है। यह स्वयं प्रकाशपूर्ण है तथा अन्य वस्तुओं को भी प्रकाशित करता है। सत्व के कारण मन तथा बुद्धि विषयों को ग्रहण करते हैं। इसका रंग श्वेत है। यह सुख का कारण होता है। सभी प्रकार की सुखात्मक अनुभूति, जैसे–हर्ष, उल्लास, संतोष, तृप्ति आदि सत्व के कार्य हैं।

रजस् : रजस् क्रिया प्रेरक है। यह स्वयं चलायमान है तथा वस्तुओं को भी उत्तेजित करता है। इसका स्वरूप गतिशील एवं उपष्टम्भक (stimulating) है। रजस् के कारण ही हवा में गति दीख पड़ती है। इन्द्रियाँ अपने विषयों के प्रति दौड़ती है। रजस् के प्रभाव में आकर मन कभी-कभी चंचल हो जाता है। इसका रंग लाल है। सभी प्रकार की दु:खात्मक अनुभूतियाँ जैसे विषाद, चिन्ता, असंतोष, अतृप्ति आदि रजस् के कार्य हैं।

तमस् : तमस् अज्ञान अथवा अन्धकार का प्रतीक है। यह ज्ञान का अवरोध करता है। यह सत्व का प्रतिकूल है। सत्व हल्का होता है परन्तु यह भारी होता है। सत्व ज्ञान प्राप्ति में सहायक होता है, परन्तु यह ज्ञान-प्राप्ति में बाधक होता है। तमस् निष्क्रियता और जड़ता का द्योतक है। इसका रंग काला होता है। यह सत्व और रजस् गुणों की क्रियाओं का विरोध करता है। तमस् के फलस्वरूप मनुष्य में आलस्य और निष्क्रियता का उदय होता है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com